IMPACT STORIES FORMAT

Story Title	दक्षा के जीवन में संघर्ष से आए बदलाव के बारे में
Date	01/10/2024
Prepared by	श्याम लाल मीणा
Name of partner Organization	गायत्री सेवा संसथान
Name of Daksha/Daksh	भंवर लाल मीणा
Name of SKB centre	कलमी
Cluster	सियाखेरी
Block	छोटीसादडी
District	प्रतापगढ़, राजस्थान

BACKGROUND/CONTEXT:

भंवरलाल मीणा, उम्र 25 वर्ष, गाँव कलमी, पंचायत टीला, ब्लॉक धम्मोतर, एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाला युवक है जो सखियों की बाड़ी केंद्र, कलमी में दक्षा के रूप में काम करता है। यह गांव जाखम बांध के पास स्थित है, जहाँ केंद्र तक पहुँचने के लिए भंवरलाल को रोजाना नाव द्वारा जाखम नदी को पार करना होता है, उसके बाद 1 किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता है। यह स्थान बेहद दुर्गम और जंगली इलाका है, जहाँ पानी की समस्या, बिजली का अभाव और अशिक्षा जैसी चुनौतियाँ सामान्य हैं।

CHALLENGES FACED:

कलमी गांव पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित है, जहाँ स्वतंत्रता के बाद से कभी ध्वजारोहण भी नहीं हुआ था और शिक्षा के बारे में लोगों की जानकारी नगण्य थी। गाँव के लोग मुख्य रूप से मछली पकड़ने और बकरी पालन पर निर्भर थे। बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव था, और पेयजल की व्यवस्था भी तालाब से होती थी।

जब सखियों की बाड़ी केंद्र की स्थापना के लिए सर्वे किया गया, तो यह पाया गया कि इस इलाके में शिक्षा को लेकर लोगों में कोई जागरूकता नहीं थी। इस चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में केंद्र चलाना बेहद कठिन था, खासकर जब पहले नियुक्त दक्षा, ईश्वरलाल मीणा, ने मौसम और पानी की समस्याओं के कारण काम छोड़ दिया था। केंद्र बंद होने के बाद, क्लस्टर हेड गणपतलाल मीणा और ब्लॉक हेड श्यामलाल मीणा ने भंवरलाल मीणा से संपर्क किया और उन्हें इस केंद्र की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित किया।

INTERVENTION/ACTIVITIES:

भंवरलाल ने अपने साहस और समर्पण से इस चुनौती को स्वीकार किया। उन्होंने केंद्र तक नाव से यात्रा करने और बच्चों को पढ़ाने का कठिन कार्य हाथ में लिया। भंवरलाल को नाव से रोजाना जाखम बांध पार करना पड़ता था, जिसमें कभी-कभी तेज पानी की लहरों का सामना करना पड़ता था। लेकिन उन्होंने अपनी जिम्मेदारी निभाई और बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए हरसंभव प्रयास किया।

गांव के बच्चों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित करने के लिए भंवरलाल ने विभिन्न शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया। उन्होंने बालगीत, कविताएँ, खेल-खेल में पढ़ाई और टीएलएम (टीचिंग लर्निंग मटेरियल्स) का प्रयोग किया, जिससे बच्चों को शिक्षा में रुचि आने लगी। धीरे-धीरे समुदाय के लोग भी भंवरलाल की सहायता करने लगे, और अब यह केंद्र नियमित रूप से चल रहा है।

OUTCOMES:

भंवरलाल के समर्पण और कठिन परिश्रम के परिणामस्वरूप अब बच्चों का शैक्षिक स्तर काफी बेहतर हो गया है। केंद्र की उपस्थिति बढ़ी है, और समुदाय के लोग भी इस बदलाव से प्रसन्न हैं। भंवरलाल का संघर्ष और सफलता यह दर्शाता है कि कैसे कड़ी मेहनत और समर्पण से दुर्गम स्थानों में भी शिक्षा का दीप जलाया जा सकता है।

GOOD QUALITY IMAGE: - 3-4 IMAGES (Attach below)